मंडपम क्षेत्र में फीतामीन मात्स्यिकी का पुनर्जागरण

उन्नीस सौ साठ से शुरू होनेवाले वर्षों में मंडपम क्षेत्र से तट संपाशों एवं ड्रिफ्ट गिल जालों द्वारा फीतामीनो की बडे पैमाने की पकड हुई थी। वर्ष 1962 में रामेश्वरम द्वीप से भी *ट्रैक्यूरस लेप्ट्यूरस* की भारी पकड हुई। लेकिन हाल के वर्षों में फीतामीनों के अवतरण में उल्लेखनीय कमी दिखाई पडी। वर्ष 1980-91 के दौरान रामेश्वरम से सिर्फ 112 टन फीतामीनों का अवतरण हुआ जो कुल अवतरण का 0.05% था और कई वर्षों से लेकर इनका अवतरण नहीं के बराबर था।

मार्च 1992 में रामेश्वरम से यंत्रीकृत युग्म यानों द्वारा 12 मी गहराई से 45.18 टन फीतामीनों की पकड हुई। अवतरण के शृंग काल में एक दिन में 320 कि ग्रा और एक एकक द्वारा 4 टन फीतामीनों को पकडा गया। दिनांक 4-3-1992 से लेकर शुरू हुआ मत्स्यन दिनांक 24-3-1992 तक पहूँचने पर उसी मत्स्यन क्षेत्र से मछली के झुंड दूर जाने के कारण खतम करना पडा।

पकड में *ट्राक्यूरस लेप्ट्यूरस* जाति प्रमुख थी और मछलियों का आकार 640-659 मि मी था। इनके पेट का विश्लेषण करने पर खाद्य का अंश दिखाया पडा। सभी नमूने अंडरिक्त अवस्था और इस अवस्था की समाप्ति पर थे। मादा और नर नमूनों का अनुपात 3.5:1 था।

फीतामीनों की पकड को प्रति कि ग्रा केलिए 4/- से 6/- रु को बेच दिया। अवतरण का 80% बर्फ में डालकर परिरक्षित किया और केरल के बाज़ारों में बेच दिया और बाकी पकड तमिलनाडु के मदुरै कोयम्बतूर और पोल्लाच्ची के बाज़ारो में बेच दिया।

लेखक

पी. जयशंकर
सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र, मंडपम, तमिलनाडु

टिप्पणी

साधारणतया इस जाति में *टी. लेप्ट्यूरस* प्रमुख है जिनमें अधिकांश नमूने 50 से मी लंबाई और अंडरिक्त अवस्था के होते है। अध्ययनों से व्यक्त हो गया है कि फीतामीनों में अप्रैल से जुलाई-अगस्त महीनों के प्रारंभ से लेकर दक्षिण की और जाने की प्रवणता है। *टि. लेप्ट्यूरस* अगस्त से अक्तूबर तक झुंडों में रहती है। हाल में यह रिपोर्ट मिली है कि अंडजनन के समय में

फीतामीन का अवतरण

इसमें झुंडों में रहने की प्रवणता अधिक है। वर्तमान अध्ययनों से व्यक्त हो जाता है कि मंडपम क्षेत्र में अप्रत्यक्ष फीतामीनों की मात्स्यिकी में महत्वपूर्ण पुनर्जागरण दिखाया पडता है।